• तंत्र शास्त्र...

पैसा न टिके तो

अगर आपके पास पैसा नहीं टिक रहा है और बरसों से लगातार गरीबी बनी हुई है तो तंत्र शास्त्र में बताए गए हनुमानजी के चमत्कारी उपाय करने से लाभ मिल सकता है। हनुमानजी से जुड़ी खास चीजें घर में रखने से मुसीबतें खत्म हो सकती हैं। कुछ लोगों के घर में बुरी नजर का प्रभाव बढ़ने से पैसों का नुकसान होता है और कर्जा बढ़ता है। बुरी ताकतों के कारण घर में झगड़े और बीमारियां आती हैं। जॉब और बिजनेस में भी लगातार नुकसान बना रहता है। इन सभी से छुटकारा पाने के लिए हनुमान जयंती को ये चीजें घर ले आएं। इनके शुभ असर से ये परेशानियां दूर हो सकती हैं।

- हनुमानजी को चढ़ा हुआ फूल लेकर उनके लगे हुए सिंदूर के साथ लाल कपड़े में बांध लें। फिर उसको ऑफिस या घर में पैसों के साथ रखें। इससे बरकत बढ़ती है और कर्जा उतर जाता है। ये फूल नुकसान से भी बचाता है।
- हनुमानजी के दाएं पैर का सिंदूर साफ लाल कपड़े में लगाएं और उस कपड़े को लाल रेशमी धागे से बांध कर घर के मेन गेट के उपर बांध दे या लटकाने से उस घर में रहने वाले लोगों को धन लाभ होता है और तरक्की मिलती है।
- हनुमानजी के कंधे का सिंदूर हनुमानजी के दाएं कंधे का सिंदूर 3 लौंग के साथ लेकर लाल कपड़े में लेकर

लाल रेशमी धागे से बांध लें। फिर घर में पवित्र या साफ जगह रखकर इसकी पूजा करें। इससे घर में शांति रहेगी। बीमारियां खत्म होंगी।
- हनुमानजी के सीने का सिंदूर और फूल हनुमानजी के सीने का सिंदूर और चढ़े हुए गुलाब के फूल की पत्तियां एक चांदी के ताबीज में डाल लें। फिर इसको घर के पूजा स्थान पर रखे और पूजा करें। इससे घर में शांति और समृद्धि आती है। ये ताबीज बुरी ताकतों से भी रक्षा करता है।

• जरूर करें...

आर्थिक संकट दूर करेंगे ये उपाय...

हिंदू धर्म में रामनवमी का बहुत अधिक महत्व है। रामनवमी का पर्व चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी को मनाया जाता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार इस दिन भगवान श्री राम जी का जन्म हुआ था। हिन्दू धर्म में रामनवमी के दिन पूजा की जाती है।रामनवमी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर सभी कामों से निवृत्त होकर स्नान करें। इसके बाद पूजा-स्थल में जाकर भगवान श्री राम की तस्वीर को शुद्ध जल से साफ करें। इसके बाद उनकी पूजा करें। इसके लिए सबसे पहले उन्हें कुमकुम, हल्दी, चंदन का तिलक लगाए। फिर भगवान राम को पुष्प अर्पित करें। इसके बाद भगवान राम की तस्वीर के सामने घी का दिया जलाएं और अगरबत्ती, धूप से वातावरण को सुगंधित करें। साथ ही उन्हें खीर या मेवे का भोग लगाएं। अगर आप आर्थिक तंगी से परेशान हैं, तो निराश न हों। इस रामनवमी पर आपको ढेर सारी खुशियां मिल सकती हैं। लेकिन इसके लिए आप राम नवमी पर इन बातों का ध्यान रखें।

- रामनवमी के दिन भगवान श्रीराम की पूजा-अर्चना करें।
- नए घर या दुकान में पूजा-अर्चना करने के बाद ही प्रवेश करें।
- नवरात्र के नौवें दिन यानी रामनवमी के दिन मां दुर्गा के नौवें स्वरूप सिद्धिदात्री मां की उपासना करें और मां दुर्गा के नाम से 9 दीप प्रज्वलित करें।
- रामनवमी के दिन गरीब-असहाय लोगों को अपने सामर्थ्य अनुसार दान-पुण्य करें। विशेषकर मिष्ठान्न वितरित करें।
- इस दिन राम का जन्मोत्सव इस तरह मनाएं जैसे घर में कोई नन्हा शिशु जन्मा हो।
- नवमी के दिन कुंवारी कन्याओं को भोजन कराएं। मंदिर में केसरिया ध्वज चढ़ाएं।
- इस दिन कन्याओं को उपहारस्वरूप चीजें भेंट करें विशेषकर पीले फूल, पीली चूड़ियां और पीले वस्त्र।
- किसी प्रकार के शुभ कार्य करने की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण दिवस है। अत- इस दिन घर में मंगल कलश की पूजन करें और मनचाही खुशियों के लिए प्रार्थना करें।
- श्रीराम नवमी के दिन रामरक्षास्त्रोत, राम मंत्र, हनुमान चालीसा, बजरंग बाण, सुंदर कांड आदि के पाठ से ना सिर्फ अक्षय पुण्य मिलता है बल्कि धन संपदा के निरंतर बढ़ने के योग जाग्रत होते हैं।
- किसी भी नए कार्य की शुरुआत, नया व्यवसाय आरंभ कर सकते हैं। श्रीराम की सपरिवार तस्वीर का पूजन अवश्य करें। अगर विजय की कामना है तो उनका धनुष प्रत्यंचा वाला स्वरूप पूजा के दौरान रखें।

आ गई बैसाखी

इस महीने खरीफ फसल पूरी तरह से पक कर तैयार हो जाती है और पकी हुई फसल को काटने की शुरुआत भी हो जाती है। ऐसे में किसान खरीफ की फसल पकने की खुशी में यह त्योहार मनाते हैं।

13 अप्रैल 1699 के दिन सिख पंथ के 10वें गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी, इसके साथ ही इस दिन को मनाना शुरू किया गया था...

बैसाखी वैशाख माह में मनाया जाने वाला त्योहार है। देश के अलग-अलग जगहों पर इसे अलग नामों से मनाया जाता है-जैसे असम में बिहू, बंगाल में नबा वर्षा, केरल में पूरम विशु के नाम से लोग इसे मनाते हैं। दरअसल सिख धर्म की स्थापना और फसल पकने के प्रतीक के रूप में बैसाखी मनाई जाती है। इस महीने खरीफ फसल पूरी तरह से पक कर तैयार हो जाती है और पकी हुई फसल को काटने की शुरुआत भी हो जाती है। ऐसे में किसान खरीफ की फसल पकने की खुशी में यह त्योहार मनाते हैं। 13 अप्रैल 1699 के दिन सिख पंथ के 10वें गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी, इसके साथ ही इस दिन को मनाना शुरू किया गया था। आज ही के दिन पंजाबी नए साल की शुरुआत भी होती है। मान्यता है कि बैसाख माह में भगवान बद्रीनाथ की यात्रा की शुरुआत होती है। पद्म पुराण में इस बैसाखी के दिन स्नान का विशेष महत्व बताया गया है। सूर्य के मेष राशि में परिवर्तन करने यानि मेष संक्रांति होने के कारण यह ज्योतिषीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होता है। सौर नववर्ष का आरंभ भी इसी दिन से होता है। सूर्य की स्थिति परिवर्तन के कारण इस दिन के बाद धूप तेज होने लगती है और गर्मी शुरू हो जाती है। इन गर्म किरणों से रबी की फसल पक जाती है। इसलिए किसानों के लिए ये एक उत्सव की तरह है। इसके साथ ही यह दिन मौसम में बदलाव का प्रतीक माना जाता है। अप्रैल के महीने में सर्दी पूरी तरह से खत्म हो जाती है और गर्मी का मौसम शुरू हो जाता है। मौसम के कुदरती बदलाव के कारण भी इस त्योहार को मनाया जाता है।

बैसाखी के दिन रात होते ही आग जलाकर उसके चारों तरफ एकत्र होते हैं और फसल कटने के बाद आए धन की खुशियां मनाते हैं। नए अन्न को अग्नि को समर्पित किया जाता है और पंजाब का परंपरागत नृत्य भांगड़ा और गिद्दा किया जाता है। गुरुद्वारों में अरदास के लिए श्रद्धालु जाते हैं। आनंदपुर साहिब में, जहां खालसा पंथ की नींव रखी गई थी, विशेष अरदास और पूजा होती है। गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहब को समारोह पूर्वक बाहर लाकर दूध और जल से प्रतीक रूप से स्नान करवा कर गुरु ग्रंथ साहिब को तख्त पर प्रतिष्ठित किया जाता है। इसके बाद पंच प्यारे पंचबानी गायन करते हैं। अरदास के बाद गुरु जी को कड़ा प्रसाद का भोग लगाया जाता है। प्रसाद भोग लगने के बाद सब भक्त गुरु जी के लंगर में भोजन करते हैं।

पद्म पुराण में कहा गया है कि वैसाख माह में प्रातः स्नान का महत्व अश्वमेध यज्ञ के समान है। वैसाख शुक्ल सप्तमी को महर्षि जह्नु ने अपने दक्षिण कर्ण से गंगाजी को बाहर निकाला था। इसीलिए गंगा का एक नाम जाह्नवी भी है। अतः सप्तमी को गंगाजी के पूजन का विधान है।

वैसाखी का नाम आते ही कानों में भले ही पंजाबी ढोल की ताल सुनाई देने लगे, भले ही मस्तिष्क में पंजाबी नृत्य भांगड़ा व गिद्दा करते पुरुष-स्त्रियों की तस्वीर छपने लगे। लेकिन फसलों के पकने का यह उल्लास सिर्फ पंजाब और हरियाणा में ही नहीं दिखाई देता बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों में इसे अलग-अलग नामों से मनाया जाता है। इस दिन दुर्गा माता जी तथा शंकर भगवान की पूजा होती है। कई जगह व्यापारी लोग आज के दिन नये वस्त्र धारण करके अपने बहीखातों का आरम्भ करते हैं।

• मिलेगा लाभ...

पूजा करने की सरल विधि...

हिंदू धर्म में शास्त्रवत पूजा का विधान बहुत ही बड़ा है जिसके लिए पर्याप्त समय निकालना सभी के लिए मुश्किल है। पूजा–पाठ के लिए एक निश्चित समय का चुनाव कर प्रतिदिन उसी समय पर पूजा–पाठ करने का प्रयास करें। यदि संभव हो सके तो अपनी पूजा पाठ का समय सवा के समय जैसे (6.15 , 7.15 , 8.15 , 9.15) इस प्रकार रखे। आसन बिछाकर , शांत मन के साथ बैठ जाये 7 घी का दीपक व धूप प्रज्वलित करें। पूजा के समय सर्वप्रथम गणेश जी के स्तुति मंत्र द्वारा गणेश जी का आव्हान करें। गणेश जी के आव्हान के बाद अपने ईष्ट देव के स्तुति मंत्र द्वारा उनका ध्यान करें , तत्पश्चात आप अपने ईष्ट देव के मंत्र जप व पाठ आदि करें। अंत में अपने ईष्ट देव या देवी की आरती करें। अब एक मिनट के लिए परमपिता परमेश्वर का ध्यान करें और जमीन से सिर स्पर्श करते हुए भगवान को प्रणाम करें और खड़े हो जाएं। अब अपने घर में स्वर्गीय बुजुर्गों की फोटो के पास जाकर उन्हें प्रणाम करें व अपने माता –पिता के पैर छुएं।

• ऐसे करें पूजा...

❑ **नवमी के दिन पूजा के दौरान लाल रंग के कपड़े में 11 कौड़ियां रख लें और उसे काले धागे से बांध लें। फिर दोनों कपड़ों पर लाल रंग की रोली से स्वास्तिक का निशान बनाकर एक कपड़े को पूजा स्थान के पास और दूसरे को अपनी अलमीरा में रख दें। इससे घर में धन–धान्य का लाभ होगा। अष्टमी व नवमी के दिन पूजा से पहले घी के 9 दीपक जलाएं। इन दीयों को स्टील या पीतल की थाली में रख दें और अपने आप बुझने दें। ऐसा करने से घर में लक्ष्मी का वास होता है और घर में धन–धान्य की कमी नहीं होती है। नवमी पर नवरात्रि समापन के बाद जानवरों को भोजन करवाएं।**